आदिवासी बंधुओं के तीर्थ बेणेश्वर धाम में स्वर्ण शिखर प्रतिष्ठा महोत्सव तथा अति विष्णु महायज्ञ महोत्सव में सम्बोधन

आज हम सबकी आस्था, विश्वास, धर्म और अध्यात्म के केंद्र बेणेश्वर धाम में श्री कृष्णहरि मंदिर, जहां स्वर्ण कलश की स्थापना हुई और महायज्ञ हुआ, इस अवसर पर माननीय अच्युतानंद जी महाराज के सानिध्य में मैं उनको प्रणाम करता हूं।

आज हमारे बीच वृंदावन से रितेश्वर जी महाराज आए हुए हैं। जो भी वृंदावन जाता है, तो उसे वह आध्यात्मिक,धार्मिक के साथ-साथ भोजन की तृप्ति कराते हैं। आज वह भी वृंदावन धाम से यहां पर पधारे हैं। अभी दो दिन पहले ही मेरे निवास पर मेरी उनसे भेंट हुई थी। यहां पधारे सभी संतगण, इस क्षेत्र के लोकप्रिय नेतागणऔर सभी श्रद्धालुओं, भाई-बहनों को मैं प्रणाम करता हूं।

दक्षिण भारत का प्रयाग, जो तीन नदियों का संगम है, वहां के बेणेश्वर धाम में हरि मंदिर और उसके साथ इस क्षेत्र में 300 वर्षों तक जिनके आध्यात्मिक-धार्मिक प्रवचन, भविष्यवाणी से लोग लाभान्वित हुए हैं, ऐसे संत माव जी महाराज को मैं प्रणाम करता हूं। ये सारा इलाका और जनजाति क्षेत्र का इलाका, जो शक्ति का केंद्र रहा, स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और शौर्य की धरती रहा, गुरु गोविंद जी, वीर बाला कालीबाई की धरती रहा, उन्हें मैं प्रणाम करता हूं। न जाने कितने संतों ने इस क्षेत्र के अंदर आध्यात्मिक-धार्मिक समाज सुधारक के रूप में इस क्षेत्र की जनता के कल्याण के लिए कार्य किया है। इन सभी संतों को मैं प्रणाम करता हूं।

महाराज के चोपड़े में लिखी उस समय की बात, उनकी दिव्य दृष्टि और सोच आज वर्तमान में सत्य नजर आ रही है। संत महाराज भगवान कृष्ण के अवतार थे। महाराज ने इस इलाके में लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने का काम किया है। एक समाज सुधारक के रूप में इस सारे क्षेत्र के लोगों को आध्यात्मिक जीवन के साथ नई दिशा देने का काम उन्होंने किया है। आज भी उनके चोपड़े पढ़े जाते हैं और यह सत्य है। उन्होंने कहा था कि राजतंत्र खत्म होगा, देश में लोकतंत्र आएगा और आज दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत है। इस लोकतंत्र के माध्यम से हमने सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन किया, लेकिन इसके साथ ही साथ हमने अपने आध्यात्म, धर्म और संस्कृति को जीवित रखा।

भौतिक रूप से भले ही कई देश प्रगति कर गए हों, लेकिन आध्यात्मिक और धार्मिक रूप में आज भी दुनिया का नेतृत्व भारत करता है और सुख-शांति के लिए दुनिया के लोग भारत आते हैं। बेणेश्वर धाम का प्रचार

इसी तरह से आध्यात्मिक धर्म और आस्था के केन्द्र के रूप में हो ताकि दुनिया के अधिक से अधिक लोग यहां सुख-शांति के लिए आएं और महाराज की भविष्यवाणियों एवं उनके चोपड़ों को पढ़ें, जिससे उनको पता चले कि किस तरह से एक संत ने उस समय भविष्यवाणी करके लोगों के जीवन में परिवर्तन करने हेतु लंबे समय तक अपनी तप-तपस्या और आध्यात्मिक ज्ञान से अपने जीवन का समर्पण किया।

आज मैं महाराज को प्रणाम करता हूं और मुझे आशा है कि हमारे अच्युतानंद महाराज जी के नेतृत्व में इस सारे क्षेत्र में जो उजाला उनके द्वारा किया गया है, निश्चित रूप से उससे सारे क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन होगा और समतामूलक समाज बनेगा। सभी समाज के लोग एक साथ बैठकर भगवान की पूजा और आराधना करेंगे तथा बेणेश्वर धाम को हम और अधिक विकसित करेंगे, ताकि आने वाले समय में देश और दुनिया के लोग यहां पर आएं।

मैं पुन: इस धरती को प्रणाम करता हूं और बेणेश्वर धाम के विकास के लिए एक कार्यकर्ता के रूप में मैं आपके साथ हूं। मुझे आशा है कि हम सब मिलकर आस्था-विश्वास के इस केंद्र के बारे में देश और दुनिया को बताएंगे, ताकि दुनिया के लोग यह देखने आएं कि कैसे-कैसे संत इस धरती पर हुए थे। आप सभी को पुन: प्रणाम और हरि मंदिर के इस कार्यक्रम के लिए आप सभी को शुभकामनाएं। इसके साथ ही पूरी टीम, जिसने दिन-रात लगकर मेहनत से इस कार्य को किया, उनको भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई।